फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 115 जनवरी 1998

नारद जी का नववर्ष संदेश :

छोटे-छोटे कदमों में,
छोटे से ले कर बड़े
दायरों में,
सतरंगी तालमेल !

नारद जी ने कोरिया देखा

ठन्ड। नाक से बहता पानी। सिर भारी। पहली जनवरी। 1998 के पहले अंक के प्रथम पृष्ठ की सामग्री बन नहीं रही। बोझिल तन से हीटर पर फिर कॉफी बनानी शुरू ही की थी कि रमते जोगी की वीणा की झन्कार ने हमारे तन-मन को खिला दिया। मजदूर लाइब्रेरी में प्रवेश करते ही नारद जी बोले, "वाह! कॉफी की महक। पिछली बार चाय थी और इस बार कॉफी है। लगता है कि तुम गम्भीर होते जा रहे हो जबकि समय चहल-पहल का आ गया है। एक कप कॉफी मुझे भी दो फिर देखो कैसे तुम्हारी गम्भीरता को चाँद पर भेजता हूँ।"

प्रफुल्लित मुद्रा में कॉफी सुटकते हुये नारद जी गुनगुना रहे थे और हम उत्सुकता से उनके मुख को निहार रहे थे। "कड़वी है" कह कर मुनिश्री ने खाली कप नीचे रखा। उनके आदतन चहकने का हम इन्तजार कर रहे थे कि नारद जी ने शान्त-मुद्रा अपना ली। कुछ देर स्थिर बैठ कर वे बोले:

" संस्कारवान व्यक्ति हूँ इसलिये बड़ों की खिल्ली उड़ाते समय भी बड़ेपन के प्रति आदर मन की गहराइयों में हिलोरे लेता रहता था। सरसरी तौर पर ही कुछ बातें इतनी धीर-गम्भीर लगती थी कि सामान्यजन की पहुँच के बाहर लगती थी। ऐसे में छोटे की महिमा में पिछले नववर्ष पर 'नमस्ते बन्द' का कसीदा पढा तब भी मन के एक कोने में चोर दबा बैठा था। परन्तु पिछले वर्ष की घटनाक्रम ने हर प्रकार के बड़े का ऐसा बँटाधार किया है कि मेरे संस्कार हवा हो गये हैं। महत्व के जो काम हैं उन्हें हर कोई आसानी से कर सकता-सकती है। गम्भीर चिन्तन-मनन की जरूरत पर्दे डालने और हेरा-फेरी के लिये रह गई है।", कहते हुये नारद जी फिर सुरूर में आ गये।

मुनिश्री की बहकी-बहकी बातों का कुछ अर्थ लगाने के प्रयास में हमारे माथों पर त्यौरी पड़ते देख नारद जी चौंके, "जानता हूँ बच्चो कि अभी तुम कुछ समझे नहीं हो। पर चिन्ता मत करो, अभी तो मैं शुरू ही हुआ हूँ। थोड़ा मुस्कुराओ और फिर सुनो।"

"अभी मैं कोरिया से आ रहा हूँ। तुमने तो अखबारों-रेडियो-टी वी पर उड़ती-सी खबर के तौर पर कोरिया के बारे में सुना होगा जबकि मैं तो प्रत्यक्षदर्शी हूँ। वाह! मजा आ गया। प्रगति के प्रतीक दक्षिण कोरिया के नये चुने गये राष्ट्रपति ने जब कहा कि सरकारी कोष में राष्ट्रपति तक की तनखा के लिये पैसे नहीं हैं तब डेवलपमेन्ट के रामबाण होने सम्बन्धी मेरे संस्कारों की जड़ें आसमान की ओर हो गई। राष्ट्रपति, मन्त्रियों, फौज, पुलिस को बनाये रखने के लिये अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने तत्काल अस्सी हजार करोड़ रुपये का कर्ज दिया है। डुबाने के लिये कर्ज नहीं दिये जाते इसलिये मुद्रा कोष ने शर्त रखी है कि दो लाख चालीस हजार करोड़ रुपयों की कर्ज की दूसरी किस्त तब दी जायेगी जब एक करोड़ मजदूरों की छँटनी कर दी जायेगी। जिन वरकरों की नौकरी बच जायेगी उन्हें पहले जितना उत्पादन करके देना होगा। खैर। सरकारों की मन्शा और अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष - विश्व बैंक की शर्तों के बारे में तुमने भी काफी-कुछ सुना होगा परन्तु यहाँ मुख्य बात यह नहीं है।", कह कर नारद जी कुछ रुक गये।

" छोटे-से देश कोरिया में एक करोड़ मजदूरों की छँटनी मुख्य बात नहीं है ?", वाले हमारे सवाल को अनसुना कर मुनिश्री अपनी ही धुन में फिर शुरू हो गये :

" यूनियनें इतनी देखी हैं कि तुम्हारी ही तरह मुझे भी यूनियनों के बारे में कोई खुशफहमी नहीं है। परन्तु दक्षिण कोरिया में कार्यरत एक लड़ाकू युनियन ढर्रे से अलग नजर आती थी। उस द्वारा संगठित ह्युन्दाई ग्रुप के जहाज और कार बनाने वाले कारखानों में हड़तालों को कुचलने के लिये सरकार को हैलिकॉप्टरों और तोप लदी जीपों के साथ बीस हजार हथियारबन्द पुलिस इस्तेमाल करनी पड़ी थी। लड़ाकू लीडरों का गिरजाघरों में अड्डे जमाना शंका पैदा करता था पर फिर भी ... खैर। राष्ट्रपति की लड़ाकू यूनियन के साथ मुद्रा कोष की छँटनी स्कीम पर चर्चा ने चमत्कारी नेताओं की सम्भावना तक को मेरे मन-मस्तिष्क से निकाल दिया।"

इतना कह कर नारद जी मन्द-मन्द मुस्कुराते हुये हमारी तरफ देखने लगे। हम पर कोई विशेष प्रभाव नजर नहीं आया तो रमते जोगी ने चौंकाने की मुद्रा में कहा, "हवाई जहाज में मेरी बगल में लन्दन के डेली टेलीग्राफ का टोकियो स्थित संवाददाता बैठा था। उसने मुझे बताया कि जापान में कब कोरिया जैसी स्थिति बन जाये, कोई नहीं जानता ! और तब मुद्रा-खुदरा कोष क्या करेंगे ? सुनो बच्चो ! यह भी महत्वपूर्ण नहीं है। जो है वह लड़खड़ा रहा है कहना अब पुराने रिकार्ड के किसी घुर में ग्रामोफोन की सूई का अटक जाना है। आवश्यकता नूतन की सृष्टि की है। और यही महत्वपूर्ण है। इसी सिलसिले में मेरा नववर्ष का सन्देश है। नोट कर लो।"

पुन : तन्मय हो कर सुन रहे हमें तब रमते जोगी ने सन्देश दिया :

" हर रोज और हर जगह तुम लोग अकेले-अकेले तथा पाँच-सात संगी-साथियों के साथ मिल कर जो छोटे-छोटे कदम उठाते हो वही वास्तव में मैनेजमेन्टों-सरकारों के हमलों को लगाम लगाते हैं। तुम्हें खुद कदम उठाने से रोकने के लिये पैदा किये जाते नेताओं को बनाये रखने के लिए क्या-क्या पापड़ बेले जाते हैं इसका पता तो परमपिता ब्रह्मा को भी नहीं होगा। प्रत्येक मजदूर जिनमें साझीदार हों उन छोटे-छोटे कदमों के योग के सम्मुख हर तीसमारखाँ ही नहीं बल्कि सब ज्ञानी-ध्यानी- बलिदानी नेता तक कहीं नहीं ठहरते। और यहीं तुम्हारे छोटे-छोटे कदमों का दूसरा असल महत्व भी है। जो कदम तुम रोज उठाते हो वे नये समाज की सृष्टि की क्षमता भी लिये हैं। करना बस इतना है कि अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करो और इन छोटे-छोटे कदमों में निकट व दूर तक फैले सतरंगी तालमेल करो। इस बार का मेरा नववर्ष का सन्देश है : 'नमस्ते बन्द' जैसे छोटे-छोटे कदमों में कई दायरों में सतरंगी तालमेल!"

मजदूर समाचार की हम पाँच हजार प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं।
आप भी छोटू गुस्ताख बनिये। अपनी बातें खुल कर कहिये, फ्री में कहिये।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

वर्कशॉप वरकर–1

मैं एक साल से एक वर्कशॉप में काम कर रहा हूँ। अपने दिमाग और चालाकी से मालिक से अपने अधिकार लेने में सक्षम हुआ हूँ।

(1) जहाँ डेढ महीने के बाद, अर्थात् हर महीने 15 तारीख से पहले तनखा नहीं मिलती थी, अब हर 7 तारीख को मिल जाती है। केवल संकेत के लिये मालिक से तनखा के दिन तारीख ही पूछने से बदलाव आया है।

(2) जहाँ 12 घन्टे तक काम करने पर एक भी चाय या मट्ठी नहीं मिलती थी वहाँ अब 2 चाय एवं मट्ठी मिलती हैं क्योंकि चाय के समय हो जाने पर मालिक का ज्यादा नुकसान होने लगा था। मालिक के पूछने पर मैं सिर्फ इतना ही कहता कि साहब मैं काम करते-करते जब थक जाता हूँ और दिमाग जब पूर्णतः गर्म हो जाती है तो न जाने अपने-आप काम बिखरने लगता है। इसलिये बहुत ज्यादा नुकसान आपको उठाना पड़ता है। मालिक को समझ में आ गया और चाय तथा मट्ठी देने का इन्तजाम कर दिये।

(3) नये मजदूर को ज्यादा-से-ज्यादा जानकार, मालिक की नजर में, बना कर अधिक से अधिक तनखा दिलवाता हूँ। अपनी समझ से उनको अधिक से अधिक काम सिखाने की कोशिश करता हूँ जिससे कि एक हैल्पर भी दक्ष मजदूर (आपरेटर) बने। उनको सिखाने से अपनी तनखा में कमी नहीं पड़ती और न ही ज्ञान में, बल्कि मालिक का जरूर ही नुकसान होता है। हम मजदूर भाई एक हैं इसलिये एक-दूसरे की मदद जरूर ही करनी चाहिए।

(4) जहाँ एडवांस एक भी पैसा नहीं मिलता था वहीं अब हर 22 तारीख को तनखा का आधा हिस्सा के बराबर एडवान्स के रूप में ले लेता हूँ केवल अपनी चन्द तरहों की लाचारी दिखा कर। जिस प्रकार मालिक काम अधिक से अधिक लेने के प्रयास जारी रखते हैं, ठीक उसी प्रकार मैं भी अपनी माँगों के वजन में बढोतरी जारी रखता हूँ।

15.12.1997 — एक वर्कशॉप वरकर

गत्तों पर होती बातें (पेज 4 का शेष)

... हम लोग तो उस दिहाड़ी के लिए खड़े हैं जिसके बदले में हम काम कर चुके हैं। 21 महीनों के 630 दिन बनते हैं और हम अपनी 21 महीनों की बकाया तनखा के लिये खड़े हैं। एक दिन की दिहाड़ी के लिये आप जितना कष्ट उठा रहे हैं उसकी तुलना में हम 630 दिन की दिहाड़ी के लिये जो कष्ट उठा रहे हैं वह तो बहुत कम है।"

पाँच महीने हो गये हैं हमें अलग-अलग सड़कों के किनारे खड़े हो कर गत्ते लगाते हुये। हर सड़क पर हम नौवीं-दसवीं बार खड़े हो चुके हैं।

● शुरु-शुरु में : यह फैक्ट्री है कहाँ ? अब तक आप कर क्या रहे थे? आपको तनखा नहीं मिल रही और आप काम भी कर रहे हैं! बहुत अनीति हो रही है। 17 महीनों तक तनखा नहीं मिली और आप चुप रहे ? इतने महीनों तक तनखा बकाया हुई कैसे ? हमारी फैक्ट्री में भी तीन महीनों से तनखा नहीं दी है।

● तीसरी-चौथी बार उसी सड़क पर गत्ते लगाने पर : आपका अब तक कुछ नहीं हुआ ? कहाँ तक बात पहुँची है ? किसी कम्पनी का कोई भरोसा नहीं। हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं ? लीडर मरवाते हैं। सब बिके हुये हैं। अपनी तनखा लेने में 10 से 11 तारीख नहीं होने देनी चाहिये। आज आपके साथ हो रहा है कल हमारे साथ हो सकता है।

● झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट, प्रशासन और लीडरों द्वारा फैलाई समझौते की खबर के बाद : सुना है कि आपका तो समझौता हो गया है। बकाया वेतन का एक पैसा भी नहीं दिया ?! लीडर ऐसे ही समझौते करते हैं। हम फैक्ट्री में भी और घरों पर भी आपके बारे में चर्चा करते रहते हैं। क्या किया जाये इसके बारे में सोचते रहते हैं। आप लोग हमारी फैक्ट्री पर आइये। आपसे बात करके कोई रास्ता निकालते हैं।

— गत्तेवाला एक मजदूर

वर्कशॉप वरकर–2

प्रधान इन्टरप्राइजेज वर्कशॉप में काम करते समय मेरे हाथ में चोट लगी। दिनांक 15.11.97 को रात की शिफ्ट में रात्री 1 बजे मेरे चोट लगी। मालिक न तो इलाज करवाने और न ही मेरी दिहाड़ी देने को तैयार हुये। एक सप्ताह तक आशा देखने के बाद दिनांक 21.11.97 को निराश हो कर मैंने श्रम विभाग में केस दर्ज करवाया। जब मालिक को नोटिस आया तो वे मेरे यहाँ चक्कर पर चक्कर लगाने लगे कि तुम जो कहोगे मैं वही करने के लिये तैयार हूँ। जितना तुम्हारा वेतन तथा इलाज का खर्च है वह सारे-का-सारा ले लो और केस वापस करवा लो। फिर अपनी गलती महसूस किये और भविष्य में किसी भी मजदूर के साथ वैसा नहीं करेंगे ऐसा उन्होंने वादा किया। इलाज के खर्च तथा एक महीने के वेतन का उन्होंने भुगतान किया तब मैंने केस वापस लिया। इसलिये हमेशा अपने अधिकार लेने के लिये इन्सान को तत्पर रहना चाहिये। इसीलिये कहा गया है कि जब सीधी अंगुली से घी नहीं निकले तो थोड़ी टेढी करनी पड़ती है।

22.12.97 — दिलीप कुमार

ई. डी. पोस्टमैन

मैं उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूँ और हरियाणा के एक दस हजार की आबादी वाले गाँव में पिछले चालीस वर्षों से पोस्ट आफिस में ई. डी. (एक्स्ट्रा डिपार्टमेन्टल) कर्मचारी के रूप में कार्यरत हूँ। मेरी आयु 62 वर्ष की हो चुकी है और अब तीन वर्ष बाद इस 400 रुपये वेतनमान वाली नौकरी से भी मेरी छुट्टी होने वाली है। मेरे पिता श्री गिरिवर सिंह जी इसी गाँव में अध्यापक लगे, यहीं से रिटायर हुये तथा डाकघर की सेवा करते हुये यहीं से चल बसे। थोड़े समय उपरान्त माताजी भी स्वर्गधाम को चली गई। तब से मैं डाकखाने वाले पण्डित के नाम से गाँव की सेवा कर डाकखाने वाली 200 वर्ष पुरानी बन्द कोटड़ी में एक खाट, एक बिस्तर, एक डेगची, एक थाली-लौटे तथा एक-एक तवे-चिमटे के साथ अपना गुजारा कर रहा हूँ।

हम तीन-चार लाख ई. डी. कर्मचारी पार्ट टाइम के नाम से 24 घन्टे अपनी ड्युटी पर पाबन्ध रहते हैं। बिना छुट्टी व बिना वृद्धि के हम सैंकड़ों जिम्मेदारियों को निभाते हुये देश के 80 प्रतिशत ग्रामीण डाकघरों को चला रहे हैं, पाँच लाख गाँवों की आबादी को जोड़े हुये हैं।

रिटायरमेन्ट के बाद हमें पेन्शन भी नहीं मिलती।

हड़ताल हम जबरदस्त कर चुके और अभी करने ही वाले थे कि न मालूम कैसे और क्यों बिचौलिये समझौता कर बैठे। अब हमें ग्रामीण चौकीदारों के साथ सीधी कार्यवाही करनी पड़ेगी।

7.12.1997 — एक ई. डी. पोस्टमैन

बी. एच. डब्लू. कैसल्स

बी. एच. डब्लू. कैसल्स, प्लाट नं. 24, सैक्टर-27 सी, फरीदाबाद में पिछले 8-9 साल से चल रही है। पहले 4 साल के. ई. डब्लू. प्लाट न. 16, सैक्टर-24 में हम श्रमिक कार्यरत थे और अब कुछ श्रमिक पावर इन्टरनेशनल, 16/2 मथुरा रोड़, फरीदाबाद में कार्यरत हैं। लेकिन, आज तक कोई भी फैक्ट्री एक्ट सम्बन्धी सुविधा प्राप्त नहीं है। ई. एस. आई., प्रोविडेन्ट फन्ड, हाजिरी कार्ड, अपॉइन्टमेन्ट लैटर, डी.ए. व हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी लागू नहीं है। छुट्टी भी नहीं मिलती हैं। और हम से दस घन्टा (10 घन्टा) ड्युटी लेते हैं जिसका ओवर टाइम आदि भी नहीं देते। 3-4 साल बाद स्थानान्तरित कर देते हैं। फरीदाबाद में इस प्रकार की टरबाइन बनाने वाली करोड़ों रुपया मुनाफा कमाने वाली पहली कम्पनी है। फिर भी अधिकारीगण सही ढँग से निरीक्षण नहीं कर रहे हैं। कम्पनी कर चोरी, बिजली चोरी, मजदूर शोषण, आदि करने में माहिर है।

26.11.97— कैसल्स पावर इन्टरनेशनल तथा बी.एच.डब्लू. कैसल्स के मजदूर

छोटू गुस्ताख बना चमचा

" कैसे हो छेदी लाल ?"

" ठीक हूँ सर ", मैंने खीसें निपोरते हुये कहा।

" क्या कर रहे हो आजकल ?"

" कुछ खास नहीं सर", मैंने कहा।

" क्यों कोई काम नहीं है क्या ? वो क्या नाम उसका .... ललित.... पिछले पाँच-छह दिनों से सस्पैन्ड चल रहा है। क्या कर रहे हो उसके बारे में ?"

" हम क्या कर सकते हैं साहब !"

" क्यों ? तो वह यूँ ही बाहर रहेगा ? सोचो आज तुम लोगों की यूनियन होती तो ?", बंसल साहब ने कहा तो मैं उन्हें देखता रह गया।

" लेकिन सर ..."

" लेकिन क्या छेदी ? अब ये ओबराय तो यूनियन बनने देगा नहीं। लेकिन ललित तुम्हारा वरकर भाई है। भई मेरी तरफ से पूरी सहायता मिलेगी। कोशिश करो। यदि इस बार कुछ नहीं किया तो ओबराय साहब ने आज ललित को सस्पैन्ड किया है, कल कोई और होगा। फिर तो बस ओबराय ही रहेगा।"

" आप ठीक कहते हैं सर। कुछ करना ही होगा।"

" वैसे एक-दो दिन देख लो अगर स्लो डाउन वगैरह से काम चल जाये तो।"

" हाँ सर, पहले स्लो डाउन करवा कर देखते हैं", कह कर मैं केबिन से बाहर आया। मैं बंसल साहब का आदमी (चमचा) था। यूँ भी अधिकतर कम्पनी में घूमता ज्यादा था। काम कम ... बातें ज्यादा। कहने का अर्थ : करनी ना करतूत, लड़ने को मजबूत। अफसरों का मेरे मुँह लगने का मतलब था अपनी बेइज्जती करवाना। मुझसे कोई कुछ कहता भी नहीं था। बंसल का चमचा जो था मैं।

मेरी लगाई आग दो घन्टे में ही फैल गई ... वरकर्स के हाथ स्लो हो गये थे। उसी शाम को मैं अमृत, बंसी, बाँके, लल्ला, चन्दर आदि के साथ ललित के घर पहुँचा। मैंने ललित को बताया कि स्लो डाउन शुरू कर दिया है और हम लोग यूनियन बनायेंगे तो वह चौंका।

" क्या कर रहे हो तुम लोग ?"

" क्या कर रहे हैं ... बंसल साहब पूरी सपोर्ट करेंगे।"

" जिस आदमी से हाथ मिलाने के बाद अपनी उँगलियाँ गिन लेनी चाहियें वो सपोर्ट करेगा ? क्यों नहीं ? यूनियन बनने से मैं अन्दर जा पाऊँ या नहीं, हमें फायदा हो या न हो, बंसल को फायदा जरूर होगा।"

हम सभी हैरानी से ललित को देखते रह गये।

" सन अस्सी का वाकया याद है ? पहले स्लो डाउन चला, फिर हड़ताल हुई। फलत मैनेजमेन्ट ने सत्ताइस मजदूर बाहर किये। औने-पौने हिसाब मिला उन्हें। और बंसल मार्केटिंग में था – खूब चाँदी कूटी उसने। हमारे स्लो डाउन पर कम्पनी ने बाहर काम करवाया। अपने रिश्तेदारों की वर्कशॉपों में भी; कट-कमीशन, बाहर जाने का टी.ए.-डी.ए., त्योहारों- न्यू ईयर पर गिफ्ट डायरी-कैलेण्डर-ड्राईफ्रूट ... सुनने में आया था कि उस स्लो डाउन के पीछे बंसल का ही हाथ था। तोमर साहब हालात को सम्भाल नहीं पाये इसलिये मैनेजमेन्ट ने उनकी छुट्टी कर दी और बंसल जूनियर प्रोडक्शन मैनेजर बन गया। ऐसा होते ही दोनों हाथों में लड्डू आ गये उसके। बिना नई भरती के बाकी के एक सौ साठ आदमियों से ही उतना ही काम निकलवाया। कट-कमीशन चलता रहा। वरना पन्द्रह हजार कमाने वाला आदमी अपनी कोठी में बीस लाख – इतना तो वह अपने मुँह से कहता है – लगा दे ? पाँच-पाँच सौ गज के तीन प्लाट सैक्टर्स में। इन्द्रा कालोनी में मेन रोड़ पर आठ दुकानें किराये पर। एक लड़का इटली में इंजिनियरिंग कर रहा है। ये सब यूँ ही नहीं होता। और जब मैनेजमेन्ट कोबरा (ओबराय साहब, जिसे हम कोबरा कहते हैं) को लाई तो उन्होंने बंसल के सारे कमाई के रास्ते बन्द कर दिये। इसलिये बंसल ने कभी भी कोबरा को दिल से कोपरेट नहीं किया। हमेशा ही पीछे से उसकी जड़ें खोदी हैं। वह चाहता है सन अस्सी का वाकया एक बार फिर हो। आखिर शेर खून का स्वाद भूल नहीं सकता। वह आदमी कभी खुद अपना नहीं हुआ तो तुम्हारा क्या होगा। याद रखो, तुम लोग तो बंसल के हो लेकिन बंसल किसी का नहीं है।", कह कर ललित चुप हो गया। हम सब चुपचाप हैरानी से सुन रहे थे।

" तुम सब नये हो, नया खून है। जोश है, कुछ कर गुजरने की तमन्ना है। मैं पुराना हूँ। कैसे कुचलती और तोड़ती है मैनेजमेन्ट, सब कुछ देखा है मैंने। फिर तुम भूल रहे हो : कुछ कोबरा के आदमी भी होंगे। वे चाहे विरोधी हों या हमारे साथ, होंगे हमारे मजदूर भाई ही। मेरा ख्याल है तुम सब इतने बेवकूफ तो नहीं होगे कि दूसरों के फायदे के लिये अपने भाइयों में से किसी का सिर फाड़ो।"

" तो फिर करें क्या ?", मैंने सिर खुजलाते हुये कहा।

" आज से ओवर टाइम बन्द", चन्दर ने चारपाई के पाये पर मुट्ठी मारते हुये कहा।

" इस से तुम सब का अपना नुकसान है", ललित ने ना में सिर हिलाया।

" तो फिर स्लो डाउन नहीं, हड़ताल नहीं, यूनियन नहीं, ओवर टाइम बन्द नहीं ... फिर कोई रास्ता तो हो", कहते हुये मैं झुँझला गया। " सीट पर बैठा एक आदमी अन्याय, अत्याचार के साथ-साथ एक-एक कर हमारी नौकरी खाता चला जाता है और हम कुछ नहीं कर सकते। मुझे कुछ नहीं पता। या तो मैनेजमेन्ट तुम्हें अन्दर लेगी या फिर चक्का जाम ! जो होगा देखा जायेगा।"

" जो होगा ? क्या होगा ? हम सब मरेंगे, उनका कुछ नुकसान नहीं होगा। ये सब हथियार उस जमाने में कारगर थे जब फैक्ट्री या मिलों में एक-दो या तीन-चार पार्टनर्स का पैसा होता था। वे घबराते थे हड़ताल या तालाबन्दी से। आजकल मैनेजमेन्टों का दौर है। कम्पनियों में अधिकतर पैसा शेयरों के रूप में यू टी आई, एल आई सी या पब्लिक का होता है। कुछ बैंक भी शेयर होल्डर होते हैं। और कम्पनियाँ आधी से अधिक या गरदन तक बैंक कर्ज में डूबी होती हैं। प्रोविडेन्ट फन्ड या लोगों की एल आई सी, ई एस आई तक जमा नहीं कराती। चन्द लोग डायरेक्टर बन कर दूसरों के पैसों पर ऐश करते हैं, लूट कर खाते हैं। ऐसे में तुम लोग हड़ताल कर दोगे तो वे उठा कर कम्पनी लॉक आउट कर देंगे। तुम क्या सरकार का कोई कानून उनकी पूँछ नहीं उखाड़ सकता। अलबत्ता कुछ लोग चाहते हैं कि चाहे बीमार हो लेकिन कम्पनी चलती रहे ताकि उनका कट-कमीशन चलता रहे।"

" तो फिर तुम्हें बाहर ही छोड़ दें" बंसी ने कहा था।

" ये मैंने कब कहा ?", कहते हुये ललित ने कहा, "देखो, कुछ और समाधान सोचना होगा। फिलहाल तो कोई स्लो डाउन नहीं, कोई हड़ताल या वायलैन्स नहीं, चुपचाप अपना काम करो।"

ललित की बातों से सब के साथ मैं भी सहमत था। साथ ही बंसल को भी पूरे तरीके से समझ गया था। ललित ने ठीक ही कहा था कि यहाँ लोग तो साहब के हैं लेकिन साहब लोगों का नहीं है। अपनी बन्दूकों के लिये कन्धा दूसरे का इस्तेमाल करते हैं ये साहब। और चमचों से ज्यादा मजबूत कन्धा किसी और का नहीं होता।

आपका छेदी लाल उर्फ छोटू गुस्ताख

Published

Reflections on

Marx's Critique of Political Economy

Reprinted

a ballad against work

The books are free.

तनखा माँगने पर ताला

पहली जनवरी को **हितकारी पोट्रीज लिमिटेड** और **हितकारी चाइना लिमिटेड** की मैनेजमेन्ट ने थर्ड शिफ्ट के मजदूरों को यह कह कर लौटा दिया कि सुबह की शिफ्ट में आना। दो जनवरी को सुबह पाँच बजे "सस्पैन्शन ऑफ आपरेशन" के नोटिस के साथ फैक्ट्रियों के गेटों पर ताले और 1200 स्त्री व पुरुष मजदूर सड़क पर। **प्रताप स्टील** और **रेमिंग्टन** मैनेजमेन्टों की ही तर्ज पर प्याली मैनेजमेन्ट ने बिना तालाबन्दी किये ताला लगाया है। " वर्क सस्पैन्ड", "सस्पैन्शन ऑफ आपरेशन" और तालाबन्दी-लॉकआउट में बाल की खाल वाले भेद बताने के लिये अदालतें हैं।

कई अन्य कम्पनियों की ही तरह हितकारी पोट्रीज और हितकारी चाइना भी आर्थिक तंगी की स्थिति में हैं। वेतन में देरी करना प्याली मैनेजमेन्ट के लिये आम बात है। परमानेन्ट मजदूरों द्वारा बार-बार विरोध की वजह से उनका एक-दो महीनों का ही वेतन मैनेजमेन्ट रोक पा रही थी परन्तु स्टाफ की तरफ से कम विरोध के कारण **कमला सिनटैक्स** की ही तरह हितकारी में स्टाफ के 100 सदस्यों को बिना वेतन काम करते पाँच महीने हो गये। प्याली मैनेजमेन्ट ने 100 कैजुअल वरकरों की तनखा भी तीन महीनों से नहीं दी। दो साल का बोनस, दो साल की इनक्रीमेन्ट और पाँच साल की वर्दी-जूते नहीं देना तो था ही। ऐसे में 25 दिसम्बर को प्रोडक्शन स्टाफ के लोगों ने अपने पाँच महीनों के बकाया वेतन के लिये फैक्ट्री के अन्दर धरना आरम्भ किया और जवाब में मैनेजमेन्ट ने ताला लगा दिया।

एक सबक सब मजदूरों के लिये

अहितकारी घटनाक्रम का एक सबक तो सब मजदूरों के लिये है : तनखा के बिना 7 से 8 या 10 से 11 नहीं होने दें। " दो दिन बाद दे देगी" की मनोवृति खतरनाक है। " लीडर बात कर रहे हैं" की आड़ में खुद कदम उठाने से बचना घातक है। **झालानी टूल्स** जैसे हालात इन्हीं का नतीजा हैं। एक तो यूँ भी 37 या 40 दिन काम करने के बाद हमें 30 दिन का वेतन दिये जाने का कानून है और ऊपर से मैनेजमेन्टें इसका भी पालन नहीं करती। ऐसे में 15-20-25 होती तारीखें दो महीनों में एक महीने की तनखा की राह 2-3-5-8 महीनों के बकाया वेतन की स्थिति पैदा कर देती हैं। जहाँ तनखा में थोड़ी देरी पर छोटे कदम उठाने से शीघ्र ही इतना दबाव पड़ता है कि मैनेजमेन्ट को वेतन का जुगाड़ तत्काल करना पड़ता है वहीं तीन-चार महीनों की बकाया तनखा को हासिल करने के लिये कई छोटे-छोटे कदमों को काफी समय तक उठाना जरूरी हो जाता है। और फिर, आज फैक्ट्रियों में सत्तर-अस्सी परसैन्ट पैसे तो कर्ज के लगे होते हैं – जमीन, बिल्डिंगें, मशीनें गिरवी रहती हैं। शेयरों के जो पैसे लगे होते हैं उनमें भी मैनेजमेन्ट के लोगों के थोड़े-से पैसे होते हैं। किसी कम्पनी की मैनेजमेन्ट बने रहने के लिये पापड़ बेलने का मुख्य कारण कट-कमीशन होते हैं। लेकिन मंडी के लिये उत्पादन के गहराते भंवर में बढती संख्या में कम्पनियाँ डूब रही हैं। ऐसे में किसी भी कम्पनी पर वेतन या बोनस-एल टी ए आदि का पैसा बकाया होने देना अपने पैसों को डुबाने की राह। दिवालियेपन की कगार पर खड़ी कम्पनी में पाँच-छह महीनों की बकाया तनखा के लिये मजदूरों में हलचल होने पर कई बार **इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड** की तरह मैनेजमेन्ट दर्शन देने बन्द कर देती है और क्लोजर की लम्बी मुकदमेबाजी शुरू हो जाती है तथा कई बार **झालानी टूल्स** की तरह मैनेजमेन्ट बची-खुची सम्पत्ति बेच कर कट-कमीशन खाने के चक्कर में वरकरों की सर्विस-ग्रेच्युटी को भी ठिकाने लगाने लगती है। मुकदमेबाजी का हाल यह है कि 1983 में बन्द की गई **ईस्ट इंडिया की जूट मिल** और **डेल्टा टूल्स** के मजदूरों को 1998 के आरम्भ तक सर्विस-ग्रेच्युटी का पैसा भी नहीं मिला है।

तनखा में तनिक भी देरी पर अकेले-अकेले से ले कर पाँच-पाँच, सात-सात की टोलियों का राशन, मकान भाड़े, बच्चों की फीस, दूधवाले के पैसे आदि-आदि-आदि समस्याओं को ले कर साहबों के पास ताँता लगा देना उचित ही नहीं बल्कि अतिआवश्यक भी है।

कुछ सुझाव प्याली मजदूरों को

मैनेजमेन्ट ने " सस्पैन्शन ऑफ आपरेशन" किया है " तालाबन्दी नहीं" इसलिये डी.एल.सी. से परमीशन आदि की मीन-मेख में उलझना अपना समय व ऊर्जा बर्बाद करना है। साहबों की मीठी-चिकनी बातें-आश्वासन मजदूरों को बिखेर कर इस मामले को भी आया-गया करने के लिये हैं। तारीखों के चक्कर में रहेंगे तो **सपना-सोभाग टैक्सटाइल्स, ईस्ट इंडिया कॉटन मिल, प्रताप स्टील, हरियाणा ट्रैक्टर्स, रेमिंग्टन** के वरकरों वाला हाल हितकारी मजदूरों का भी हो जायेगा। और किन्ही बिचौलियों-बड़बोलों के फेर में पड़ने से पहले **लखानी शूज** के हाल ही में नौकरी से निकाले गये 1400 मजदूरों के कड़वे अनुभवों को पचा लें।

वे कदम जो आसान हों, कम से कम खर्चीले हों, कम से कम खतरे लिये हों, जिन्हें प्रत्येक वरकर उठा सकता-सकती है और जिनका सरकारी साहबों तथा फरीदाबाद-भर की मैनेजमेन्टों पर शीघ्र व भारी असर पड़ता हो, ऐसे कदमों पर विचार करें। इस सन्दर्भ में हमारे कुछ सुझाव हैं :

❋ पाँच-पाँच, सात-सात की टोलियों में दस बजे से पाँच बजे तक डी.एल.सी. और डी.सी. के दफ्तरों के ताँता लगाना। लिख कर और जबानी अपनी बातें कहना। एक दिन में 200 टोलियों को देखते, सुनते साहबों के सिर चकराने लगेंगे। अपने सिर बचाने के लिये वे प्याली मैनेजमेन्ट का सिर पकड़ने को मजबूर होंगे।

❋ गत्तों पर अपनी बातें लिख कर अन्य मजदूरों को बताना। शिफ्टों के समय सुबह और शाम पच्चीस सड़कों पर तथा लन्च के समय विभिन्न फैक्ट्रियों के गेटों पर आठ-आठ, दस-दस की टोलियाँ गत्ते ले कर जायेंगी तो पूरे फरीदाबाद में हितकारी मजदूरों की समस्या को चर्चा का विषय बना देंगी। फरीदाबाद-भर की मैनेजमेन्टें दस दिन में ही परेशान हो जायेंगी और अपना पिन्ड छुड़ाने के लिये प्याली मैनेजमेन्ट पर दबाव डालने को मजबूर होंगी।

झालानी टूल्स के दो हजार में से दस-बीस मजदूर ही गत्तों के साथ सक्रिय हैं इसलिये असर के बावजूद 21 महीनों के बकाया वेतन का मामला खिंच रहा है। प्याली के 1200 वरकर 200 टोलियों में सक्रिय हो कर शीघ्र नतीजे हासिल कर सकेंगे।

गत्तों पर होती बातें

(मैनेजमेन्ट ने 21 महीनों से वेतन नहीं दिया है। जब 17 महीने बिना तनखा के हो गये और लीडरों-यूनियनों तथा राज्य व केन्द्र सरकार को हर स्तर पर आजमा चुके तब झालानी टूल्स के कुछ मजदूरों ने गत्तों पर अपनी बातें लिख कर फरीदाबाद में हर रोज शिफ्टें आरम्भ होने के समय सड़कों के किनारे खड़ा होना शुरू किया। इन पाँच महीनों में गत्तों से छिड़ी बातचीत का एक अंश प्रस्तुत है।)

● ओल्ड फाटक पर चार-पाँच साल की एक लड़की : " पापा ये लोग गत्ते ले कर क्यों खड़े हैं?" पापा गत्तों की तरफ देख कर पढने लगे तभी लड़की बोल पड़ी : " गत्तों पर कुछ लिखा है तभी तो गत्ते दिखा रहे हैं।"

● 27 दिसम्बर को कड़ाके की ठन्ड। सुबह सात बजे से ही हम गत्ते लिये गुडईयर के पास मथुरा रोड़ पर खड़े थे। साढे सात होते-होते फैक्ट्रियों को जाते मजदूरों से पूरी सड़क खचाखच। साइकिल से उतर कर एक मजदूर बोला, " इस ठन्ड में भी क्यों मर रहे हो यार ?"

" आप भी तो इस ठन्ड में ड्युटी जा रहे हैं।"

" क्या करें ? दिहाड़ी के लिये करना ही पड़ता है।"

" आप तो 8 घन्टे की दिहाड़ी के लिए इस ठन्ड में जा रहे हैं जबकि

(बाकी पेज 2 पर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।